केन्द्रीय मृदा लवणता संस्थान करनाल में हिन्दी पखवाड़ा समापन व पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

आज केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में 14 से 28 सितम्बर 2020 तक आयोजित किए गए हिन्दी पखवाड़े का समापन व पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन संस्थान के सभागार में किया गया। इस समापन समारोह के अध्यक्ष तथा संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने मुख्य अतिथि माननीय डा. चन्द्रशेखर भारद्वाज, प्राचार्य, दयाल सिंह महाविद्यालय, करनाल का स्वागत किया। यह कार्यक्रम कोविड–19 के नियमों की अनुपालना करते हुए आयोजित किया गया। इस अवसर पर डा. नीना शर्मा, डा. सीमा शर्मा व डा. दीप शिखा ने वाद–विवाद प्रतियोगिता में निर्णायक मडल की भुमिका में हिस्सा लिया।

मुख्य अतिथि डा. चन्द्रशेखर भारद्वाज ने अपने संबोधन में सरकारी काम–काज में हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिन्दी भारत की 22 भाषाओं को एक सूत्र में पिरोती है। स्वंत्रतता आंदोलन में हिन्दी का महान योगदान रहा है। संस्थान का अनुसंधान कार्य आम बोलचाल की भाषा में होना चाहिए और भारत में यह भाषा हिन्दी ही हो सकती है। संस्थान अपने शोध कार्यो का प्रकाशन हिन्दी में कर रहा है यह जानकर मुझे बहुत खुशी है। और में इसकी सराहना करता हूँ। संस्थान ने हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उतर प्रदेश में शोध के माध्यम से काफी बंजर भुमियो को सुधारा है। भाषा वो ही तरक्की करती है जो अधिक से अधिक शब्द दुसरी भाषाओं के ग्रहण करें। हिन्दी में भी अन्य भाषाओं के बहुत से शब्द स्वीकार किए गए है। अंग्रेजों ने हिन्दी को महत्वहीन करके अंग्रेजी को महत्व दिया है इसलिए वह भारत पर शासन कर पाए। अग्रेंजी में 80 प्रतिशत शब्द ग्रीक व लेटिन भाषा से लिए गए है। यदि हमें पूरे विश्व पर अपना प्रभूत्व कायम करना है तो हमें हिन्दी को अपनाना होगा। नई पीढ़ी को विकास के लिए हिन्दी को नही भूलना चाहिए। जब तक हम हिन्दी का प्रयोग नही करेंगे तो हमारा देश विकसित नही होगा। हमें हिन्दी की प्रतियोगिताओं के माध्यम से हिन्दी का प्रचार–प्रसार बढ़ाना चाहिये और उन्होंने संस्थान में हिन्दी के कार्यों की प्रगति को देखकर प्रसन्नता व संतोष व्यक्त किया और कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें।

संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने बताया की देश के प्रधानमंत्री जी का सपना सन 2022 तक किसानों की आय को दुगना करने का है जिसके लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में कई योजनाए बनाई गई है तथा यह संस्थान उनयोजनाओं को पूरा करने में पूर्ण रूप से अपना योगदान दे रहा है। इस दिशा में उन्होने पुडंरक गांव के एक युवा किसान का उदाहरण देते हुए बताया की कैसे उसनें एक एकड में बहुत ज्यादा आमदनी प्राप्त की। उन्होने कहा कि हिन्दी विचार प्रकट करने के लिए एक सरल, सशक्त और समृद्ध माध्यम है। हमारे देश की 80 प्रतिशत जनता हिंदी समझ सकती है तथा 65 प्रतिशत जनता इसको बोल व लिख सकती है। विचारों को मूर्त रूप देने के लिए हिंदी सशक्त माध्यम है। हिंदी को आगे बढ़ाना संविधानिक उत्तरदायित्व है। हिंदी 80 देशों में बोली जाती है और 200 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। आज गूगल, याहू वेबसाइट भी अपना हिंदी में कार्य कर रही है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी कर्मचारी हिन्दी अधिक से अधिक कार्य करें।

इस पखवाड़े के दौरान संस्थान में हिन्दी के ज्ञान व प्रयोग को बढ़ाने हेतु आशु भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन, आवेदन लेखन, हिन्दी टंकण, टिप्पणी एवं मसौदा लेखन, सरकारी काम–काज में मूल हिन्दी आलेखन, प्रश्नोत्तरी, हिन्दी गीत अन्ताक्षरी, कविता पाठ व चलवैजयन्ती व वाद–विवाद इत्यादि 13 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। आकर्षक व मनोरंजक अन्ताक्षरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। प्रतियोगिताओं अध्किारियों व कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर उत्साहपूर्वक भाग लिया व विजेताओं ने पुरस्कार प्राप्त किये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि चन्द्रशेखर भारद्वाज तथा संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने हिंदी योजना के अंतर्गत वर्ष भर हिन्दी में अधिकाधिक उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियो तथा हिन्दी पखवाड़े के दौरान हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार व प्रमाण पत्र वितरित किये। निदेशक महोदय ने पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई 13 प्रतियोगिताओं एवं उनमें भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों की सराहना की तथा विजेताओं को हार्दिक बधाई दी।

इससे पूर्व हिन्दी पखवाड़ा समिति के अध्यक्ष डा. मधु चौधरी ने मंच सचालन एवं पखवाड़े की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा डा. कैलाश प्रजापत ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया । इस अवसर पर संस्थान के सभी अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।